इकाई - III

7 मेरा जीवन

प्रार्थना करने वाले होंठों से
सहायता करने वाले हाथ कहीं
अच्छे हैं।

- मदर तेरेसा

© SCERT not to be republished

प्रश्न

1. इस चित्र से कौनसी भावना प्रकट होती है?
2. आपको समाज सेवा करना कैसा लगता है?
3. मदर तेरेसा के जीवन से क्या प्रेरणा मिलती है?

उद्देश्य

लक्ष्य की राह में खुशहाल, सुखी जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा देना।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. पाठ पढ़िए। नये शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
2. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
3. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

मैं ने हँसना सीखा है, मैं नहीं जानती रोना ।
बरसा करता पल पल पर, मेरे जीवन में सोना ।
मैं अब तक जान न पाई कैसी होती है पीड़ा ?
हँस हँस जीवन में कैसे करती हैं चिंता क्रीड़ा ?

जग है असार सुनती हूँ मुझको सुख-सार दिखाता ।
मेरी आँखों के आगे सुख का सागर लहराता ।
उत्साह उमंग निरंतर रहते मेरे जीवन में ।
उल्लास विजय का हँसता मेरे मतवाले मन से ।

आशा आलोकित करती मेरे जीवन को प्रतिक्षण ।
है स्वर्णसूत्र से वलयित मेरी असफलता के धन ।
सुख भरे सुनहरे बादल रहते हैं मुझको घेरे ।
विश्वास, प्रेम, साहस जीवन के साथी मेरे ।

कवयित्री : सुभद्रा कुमारी चौहान
जीवनकाल : 1904 - 1948
रचनाएँ : मुकुल, त्रिधारा।
विशेष : सुभद्राजी के चित्र का भारतीय डाक सेवा द्वारा स्टैंप जारी।

© NCERT not to be republished

अर्थग्राह्यता - प्रतिक्रिया

(अ) नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(अ) जीवन में हँसते-बोलते रहना क्यों ज़रूरी है?

(आ) खुशहाल जीवन की क्या विशेषता है।

(इ) 'प्रसन्न व्यक्ति दुखी नहीं होता' इस पर अपने विचार बताइए।

(आ) कविता पढ़कर नीचे दिये गये अभ्यास पूरे कीजिए।

*** इन पंक्तियों का उचित क्रम बताइए।**

1. उत्साह उमंग निरंतर रहते मेरे जीवन में । ( )
2. उल्लास विजय का हँसता मेरे मतवाले मन से । ( )

*** नीचे दी गयीं पंक्तियों के भाव स्पष्ट कीजिए।**

1. हँस-हँस जीवन में कैसे करती है चिंता क्रीड़ा?
2. मेरी आँखों के आगे सुख का सागर लहराता।
3. सुख भरे सुनहरे बादल रहते हैं मुझको घेरे।
4. विश्वास, प्रेम, साहस जीवन के साथी मेरे।

*** नीचे दिया गया पद्यांश पढ़कर इसका भाव अपने शब्दों में लिखिए।**

बार-बार आती है मुझको,
मधुर याद बचपन तेरी।
गया ले गया जीवन की,
सबसे मस्त खुशी मेरी।।

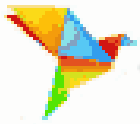

अभिव्यक्ति - सृजनात्मकता

(अ) पाठ के आधार पर नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।

1. कवयित्री ने जीवन में क्या सीखा है ?
2. कवयित्री को यह संसार कैसा लगता है ?
3. कवयित्री ने खुशहाल जीवन का क्या कारण बताया है ?
4. कवयित्री ने जीवन का साथी किसे बताया है ?
5. 'मेरा जीवन' कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

(इ) कवयित्री ने अपनी कविता में आशावादी भावना कैसे उभारी है?

© SCERT not to be republished

भाषा की बात

(अ) निम्न शब्दों पर ध्यान दीजिए।

सुख का सार - सुख सार
बिना किसी अंतर के - निरंतर
हर एक क्षण - प्रतिक्षण
सुख और दुख - सुख-दुख
जो कानों को मधुर लगें- कर्णमधुर

इस तरह दो या उससे अधिक शब्दों के मेल से बने शब्द को समास कहते हैं।

समास के प्रकार

अव्ययीभाव समास	-	प्रतिक्षण, निरंतर
कर्मधारय समास	-	स्वर्णसूत्र, सुनहले बादल
तत्पुरुष समास	-	सुखसार, सुखसागर
द्वंद्व समास	-	सुख-दुख, आशा-निराशा
द्विगु समास	-	चौराहा, त्रिभुज
बहुब्रीहि समास	-	गोपाल, पंकज

नीचे दिये गये शब्दों को सामासिक रूप में बताइए।

माता और पिता	घर-घर	राजा का भवन
कीचड़ में जन्म लेने वाला	तीन भुजाएँ	अग्नि जैसा क्रोध

परियोजना कार्य

सुभद्रा कुमारी चौहान की कोई एक कविता संग्रहित कीजिए।

जीवन एक वरदान है। इसका हमें सदुपयोग करना चाहिए।

© SCERT not to be republished

8 यक्ष प्रश्न

- ईश्वर क्या है?
- जन्म के पहले हम क्या थे?
- मृत्यु के बाद हमारा क्या होगा?
- ईश्वर अगर है तो क्या उसे देखा जा सकता है?

- स्वामी विवेकानंद

© SCERT not to be republished

प्रश्न

1. ये प्रश्न किस के मन में उत्पन्न हुए थे?
2. स्वामी विवेकानंद ने इन प्रश्नों का उत्तर किस से पूछा था?
3. व्यक्तित्व के निर्माण में प्रश्नों का क्या महत्व होता है?

उद्देश्य

जिज्ञासा व दार्शनिक प्रश्नों के माध्यम से बौद्धिक विकास करना-

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. पाठ पढ़िए। नये शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
2. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
3. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

यह घटना महाभारत काल की है। उस समय पांडव द्रौपदी सहित बारह वर्ष के वनवास पर थे। एक दिन अचानक एक ब्राह्मण पांडवों के पास आया। वह अपनी व्यथा सुनाते हुए कहने लगा, ''एक हिरण मेरी अरणी की लकड़ी सहित भाग गया। अब मेरे पास यज्ञ की अग्नि पैदा करने के लिए दूसरी लकड़ी नहीं है। कृपया मेरी लकड़ी वापस दिला दो।''

पांडव ब्राह्मण की व्यथा से प्रभावित हुए। इसलिए वे हिरण की खोज में निकल पड़े। थोड़ी दूर जाने पर उन्हें हिरण दिखायी दिया। उसे पकड़ने के लिए वे आगे बढ़े परंतु हिरण उनकी आँखों से पुनः ग़ायब हो गया। हिरण की खोज में भटकते हुए वे थक गये और विश्राम के लिए एक वृक्ष के नीचे बैठ गये। प्यास के मारे सभी के कंठ सूख रहे थे। युधिष्ठिर ने नकुल को पानी की तलाश में भेजा। नकुल पानी की खोज में निकला और चलते-चलते एक सरोवर के पास पहुँचा। सरोवर देखकर उसका मन प्रफुल्लित हो उठा। वह सोचने लगा कि क्यों न मैं पहले अपनी प्यास बुझा लूँ। वह पानी पीने के लिए उद्यत ही हुआ था कि सहसा एक आवाज़ गूँज उठी, ''ऐ नकुल, पानी पीने का दुस्साहस न करें। सावधान! पहले मेरे प्रश्नों के उत्तर दो।'' नकुल चेतावनी की परवाह न करके पानी पीने लगा। पानी पीते ही वह भूमि पर गिर पड़ा। बहुत देर नकुल के न लौटने पर युधिष्ठिर को चिंता सताने लगी। उन्होंने उसकी खोज में बारी-बारी से सहदेव, अर्जुन और भीम को भेजा। यक्ष की चेतावनी की उपेक्षा करते हुए सभी ने सरोवर तट पर प्यास बुझाने का प्रयास किया और नकुल की भाँति धरा पर गिर गये। जब कोई भी लौटकर न आया तो युधिष्ठिर स्वयं चिंतित अवस्था में उनकी खोज में निकल पड़े। तृषा से व्याकुल युधिष्ठिर पहले अपनी प्यास शांत करने के लिए सरोवर की ओर गये। वहीं युधिष्ठिर को अपने भाई धरा पर पड़े दिखायी दिये। जैसे ही वे आगे बढ़े तो उन्हें भी वही आवाज़ सुनायी दी। सावधान! तुम्हारे भाइयों ने मेरी चेतावनी की ओर ध्यान नहीं दिया। इसलिए उनकी यह दशा हुई। यदि तुम पानी पीना चाहते हो तो पहले मेरे प्रश्नों के उत्तर दो, फिर अपनी प्यास बुझाना। युधिष्ठिर ने कहा श्रीमान! आप प्रश्न कीजिए, मैं उत्तर देने के लिए तैयार हूँ।

© NCERT not to be republished

यक्ष - मनुष्य का साथ कौन देता है?

युधिष्ठिर - धैर्य ही मनुष्य का साथ देता है।

यक्ष - कौन-सा शास्त्र (विद्या) है, जिसका अध्ययन करके मनुष्य बुद्धिमान बनता है?

युधिष्ठिर - कोई भी शास्त्र ऐसा नहीं है। महान लोगों की संगति से ही मनुष्य बुद्धिमान बनता है।

यक्ष - भूमि से भारी चीज़ क्या है?

युधिष्ठिर - संतान को कोख में धारण करनेवाली माता भूमि से भी भारी होती है।

यक्ष - आकाश से भी ऊँचा कौन है?

युधिष्ठिर - पिता।

यक्ष - हवा से भी तेज़ चलनेवाला कौन है?

युधिष्ठिर - मन।

यक्ष - विदेश जानेवाले का कौन साथी होता है?

युधिष्ठिर - विद्या।

यक्ष - मरणासन्न वृद्ध का मित्र कौन होता है?

युधिष्ठिर - दान, क्योंकि वही मृत्यु के बाद अकेले चलने वाले जीव के साथ-साथ चलता है।

यक्ष - सुख क्या है?

युधिष्ठिर - जो शील और सच्चरित्र पर स्थित है।

यक्ष - सबसे तुच्छ क्या है?

युधिष्ठिर - चिंता

यक्ष - किसके छूटजाने पर मनुष्य सर्वप्रिय बनता है?

युधिष्ठिर - अहंभाव के छूट जाने पर।

© SCERT not to be republished

इसी प्रकार यक्ष ने कई अन्य प्रश्न भी किये और युधिष्ठिर ने उन सबके ठीक-ठीक उत्तर दिये। अंत में यक्ष बोला- ''राजन्! मैं तुम्हारे मृत भाइयों में से एक को जीवित कर सकता हूँ। तुम जिस किसी को भी चाहो, वह जीवित हो जाएगा।''

युधिष्ठिर ने पलभर सोचा कि किसे जीवित कराऊँ? थोड़ी देर रुककर बोले- ''मेरा छोटा भाई नकुल जी उठें।''

युधिष्ठिर के इस प्रकार बोलते ही उन्होंने पूछा - ''युधिष्ठिर! दस हज़ार हाथियों के बलवाले भीमसेन को छोड़कर तुमने नकुल को जीवित करवाना क्यों ठीक समझा?''

युधिष्ठिर ने कहा- ''यक्षराज! मैंने जो नकुल को जीवित करवाना चाहा, वह सिर्फ़ इसी कारण कि माता कुंती का बचा हुआ एक पुत्र मैं हूँ, मैं चाहता हूँ कि माता माद्री का भी एक पुत्र जीवित हो उठे। अतः आप कृपा करके नकुल को जीवित कर दें।''

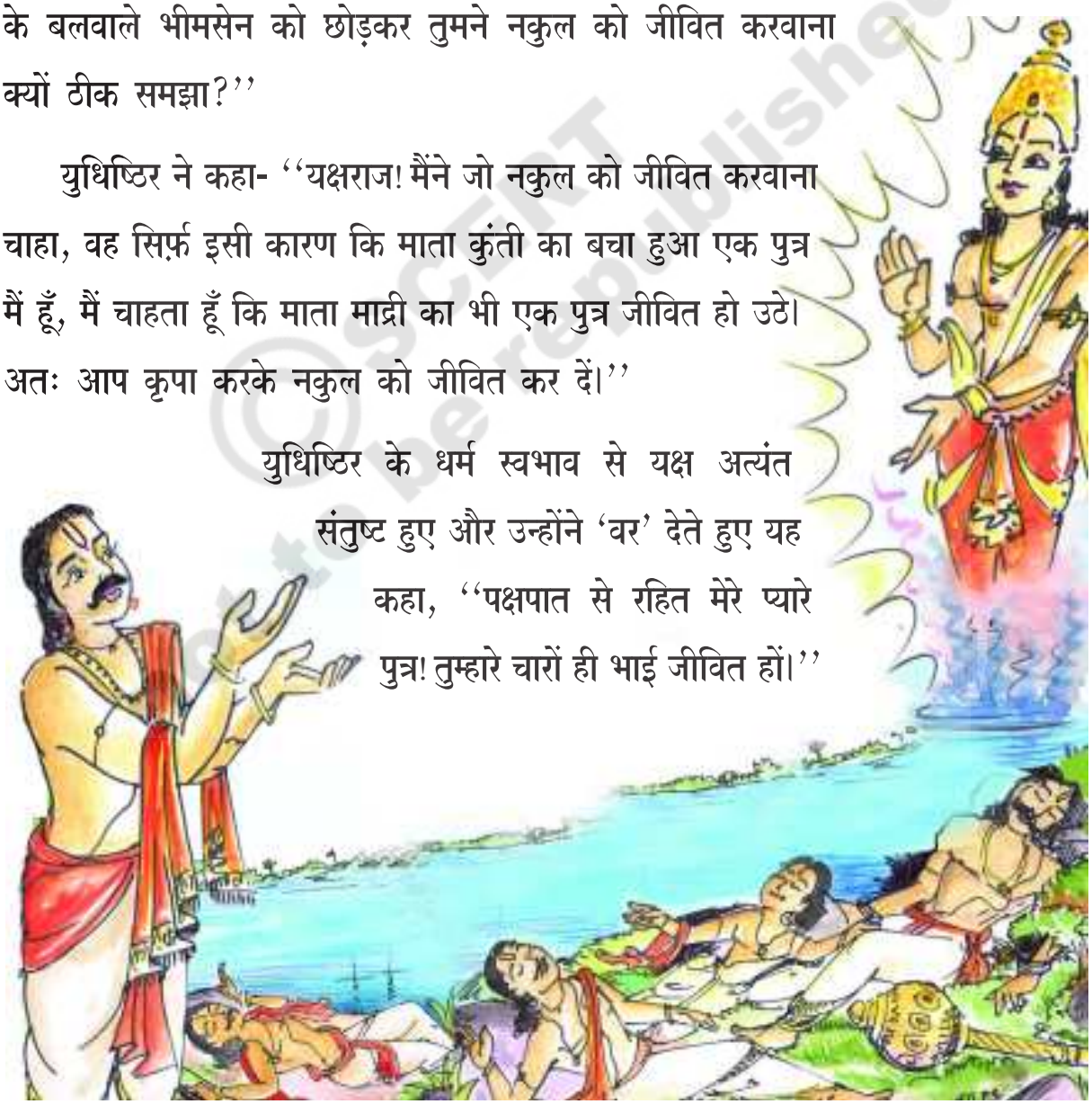

युधिष्ठिर के धर्म स्वभाव से यक्ष अत्यंत संतुष्ट हुए और उन्होंने 'वर' देते हुए यह कहा, ''पक्षपात से रहित मेरे प्यारे पुत्र! तुम्हारे चारों ही भाई जीवित हों।''

© SCERT not to be republished

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर सोचकर दीजिए।

1. युधिष्ठिर के बारे में बताइए।
2. युधिष्ठिर की जगह तुम होते तो किसे जीवित करवाना चाहते और क्यों?

(आ) पाठ पढ़िए। उत्तर दीजिए।

♦ **पाठ के आधार पर वाक्यों को सही क्रम दीजिए।**

1. युधिष्ठिर ने नकुल को पानी की तलाश में भेजा। ( )
2. पक्षपात से रहित मेरे प्यारे पुत्र! तुम्हारे चारों ही भाई जीवित हो। ( )
3. तुम जिस किसी को भी चाहो, वह जीवित हो जाएगा। ( )
4. पांडव ब्राह्मण की व्यथा से प्रभावित हुए। (1)

♦ **प्रश्नों के सही उत्तर दीजिए।**

रानी सुदेष्णा का भाई कीचक बड़ा ही बलिष्ठ और प्रतापी वीर था। मत्स्य देश की सेना का वही नायक बना हुआ था। उसने अपने कुल के लोगों को साथ लेकर मत्स्याधिपति बूढ़े विराटराज की सत्ता पर अप्रत्यक्ष रूप से अधिकार कर लिया था। कीचक की धाक लोगों में ऐसी बनी हुई थी कि लोग कहा करते थे कि मत्स्य देश का राजा तो कीचक ही है।

1. रानी सुदेष्णा का भाई कौन था? ( )
   (अ) युधिष्ठिर (आ) कीचक (इ) विराटराज (ई) हनुमान
2. विराट किस देश के राजा थे? ( )
   (अ) मगधराज (आ) पांचाल (इ) मत्स्य देश (ई) वैदेह
3. देश की सेना का नायक कौन बना हुआ था? ( )
   (अ) कीचक (आ) विराटराज (इ) भीम (ई) हनुमान

♦ **इन प्रश्नों के उत्तर तीन वाक्यों में दीजिए।**

1. ब्राह्मण पांडवों के पास आकर कौन सी व्यथा सुनाने लगा?
2. युधिष्ठिर को सरोवर के पास कौनसी चेतावनी सुनायी दी?
3. युधिष्ठिर ने नकुल को जीवित करवाने का अनुरोध क्यों किया?
4. यक्ष ने युधिष्ठिर के सद्गुणों से मुग्ध होकर कौन-सा वर दिया?

© SCERT not to be republished

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. पांडवों को वनवास क्यों जाना पड़ा?
2. अरणी की लकड़ी किसे कहते हैं?
3. सरोवर के पास किसने युधिष्ठिर से प्रश्न किये?

(आ) यक्ष के किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(इ) यदि यक्ष के स्थान पर आप होते तो कौन-कौन से प्रश्न पूछते?

(ई) 'यक्ष प्रश्न' पाठ आपको क्यों अच्छा लगा? अपने शब्दों में लिखिए।

भाषा की बात

(अ) इन शब्दों के अर्थ बताइए। वाक्य प्रयोग कीजिए।

1. तृषा 2. अग्रसर 3. चेतावनी 4. दुस्साहस 5. पक्षपात

(आ) पर्यायवाची शब्द पहचानकर रेखा खींचिए।

धरती	तात	जनक	बाप
पिता	खोज	अन्वेषण	आविष्कार
तलाश	वायु	पवन	समीर
हवा	भूमि	धरा	पृथ्वी

(इ) निम्न शब्दों पर ध्यान दीजिए। दो शब्दों के मेल में हुए विकार को समझिए।

उद्यंत	यद्यपि	दुस्साहस	निस्संदेह	निस्सार	मरणासन्न
पुस्तकालय	सच्चरित्र	सज्जनता	प्रत्यक्ष	प्रत्येक	प्रत्यंग
प्रत्युपकार	प्रत्युत्तर	अत्यंत	अत्याचार	अत्युत्साह	दिनांक

मरण	+	आसन्न	=	मरणासन्न
प्रति	+	अक्ष	=	प्रत्यक्ष
सत्	+	चरित्र	=	सच्चरित्र
दुः	+	साहस	=	दुस्साहस

इस तरह दो शब्दों के मेल से एक नया शब्द बनता है और दोनों के बीच विकार होता है। इसे संधि कहते हैं। संधि के प्रकार-

1. स्वर संधि, 2. व्यंजन संधि, 3. विसर्ग संधि

© SCERT not to be republished

दो स्वरों के बीच विकार हो तो स्वर संधि कहते हैं। स्वर संधि के प्रकार -

1. दीर्घ संधि	जैसे-	पुस्तक + आलय = पुस्तकालय, कवि + इंद्र = कवींद्र, गुरु + उपदेश = गुरूपदेश,
2. गुण संधि	जैसे-	महा + ईश्वर = महेश्वर, पर + उपकार = परोपकार, महा + ऋषि = महर्षि,
3. वृद्धि संधि	जैसे-	एक + एक = एकैक, सुंदर + ओदन = सुंदरौदन महा + औषधि = महौषधि
4. यण संधि	जैसे-	प्रति + अक्ष = प्रत्यक्ष, सु +आगत = स्वागत मातृ + अनुमति = मात्रनुमति
5. अयादि संधि	जैसे-	ने + अन = नयन, भो + अन = भवन

व्यंजन संधि में व्यंजन के साथ स्वर या व्यंजन का मेल होता है। जैसे-

जगत् + ईश = जगदीश,	दिक् + गज = दिग्गज,	वि + सम = विषम
वाक् + ईश = वागीश,	सत् + जन = सज्जन,	षट् + दर्शन = षड्दर्शन

विसर्ग संधि में विसर्ग का परिवर्तन समझिए- :

श्	ष्	स्	र्	ई	लोप	ओ
निः + चल निश्चल	निः + कपट निष्कपट	निः + संदेह निस्संदेह	निः + बल निर्बल	निः + रस नीरस	निः + शुल्क निशुल्क	मनः + रंजन मनोरंजन

परियोजना कार्य

पंचतंत्र की नीतिप्रद कहानियों में से किसी एक कहानी का संग्रह कीजिए।

जो कर्त्तव्य से बचता है, लाभ से वंचित रहता है। - पार्कर

© SCERT not to be republished

9 रमज़ान

प्रश्न

1. चित्र में क्या दिखायी दे रहा है?
2. देश के विकास के लिए एकता का क्या महत्व है?
3. जीवन में त्योहारों का क्या महत्व है?

उद्देश्य

त्यौहार मानवता का संदेश देते हैं। ऐसे ही रमज़ान भी शांति, अहिंसा, त्याग, परोपकार, न्याय, धर्म आदि गुणों का विकास करता है। इस पाठ के द्वारा छात्रों में संस्कृति और सद्भावना का विकास करना है।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. पाठ पढ़िए। नये शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
2. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
3. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

© SCERT not to be republished

भारत प्राचीन और विशाल देश है। यहाँ अनेक धर्मों व जातियों के लोग रहते हैं। सभी धर्मों के लोग विविध प्रकार के उत्सव व त्यौहार मनाते हैं। ये त्यौहार समाज में खुशी और सजगता लाते हैं। ये भारतीय संस्कृति की शोभा में चार चाँद लगाते हैं। ऐसे ही महत्वपूर्ण त्यौहारों में से ईद-उल-फ़ितर भी एक है। इसे रमज़ान भी कहते हैं।

रमज़ान इस्लाम धर्म का प्रमुख त्यौहार है। वास्तव में रमज़ान इस्लाम धर्म के नौवें महीने का नाम है। इस्लाम धर्म के पाँच बुनियादी सिद्धांतों 1. तौहीद 2. नमाज़ 3. रोज़ा 4. ज़कात 5. हज में तीसरा सिद्धांत 'रोज़ा' है। इसे रमज़ान के महीने में अदा किया जाता है। यह इबादतों (प्रार्थनाओं) व बरकतों का महीना है। यह माना जाता है कि इसी महीने में पवित्र ग्रंथ 'कुरान-ए-शरीफ़' नाज़िल हुआ है।

इस्लामी महीना चाँद के निकलने से शुरू होता है। रमज़ान का चाँद निकलने पर इसकी सूचना विविध प्रकार से दी जाती है। रमज़ान मास की सूचना मिलते ही मुसलमान भाई रोज़ों की तैयारियों में लग जाते हैं और रमज़ान के महीने भर रोज़े रखते हैं। रोज़ा मानी उपवास है। रोज़ा रखने के लिए सूर्योदय से लगभग डेढ़ घंटा पहले आहार लिया जाता है। इसे 'सहरी' कहते हैं। सहरी के बाद से उपवास आरंभ होता है। उपवास में पानी तक पीना मना है। इस तरह रोज़ा रखकर दैनिक कार्य करते हुए मन को अल्लाह की इबादत में लगाना रमज़ान का मुख्य उद्देश्य है।

रोज़ा रखने से मनुष्य स्वस्थ व चुस्त बना रहता है और उसमें आत्मसंयम, आत्मनियंत्रण, आत्मविश्वास, आत्मानुशासन आदि गुण विकसित होते हैं। जिससे सामाजिकता की भावना बढ़ती है। अपने कर्त्तव्यों का बोध होता है। गरीबों के दुख-दर्दों का अनुभव किया जाता है और उनकी सहायता की जाती है।

© SCERT not to be republished

रोज़ा सूर्यास्त के साथ ही खजूर, फल, मेवा, पानी आदि से खोला जाता है। इसे इफ़तार कहते हैं। कई स्थानों पर इफ़तार की दावत भी रखी जाती है जिससे भाईचारे का विकास होता है। रमज़ान में पाँच फ़र्ज़ नमाज़ों के साथ-साथ विशेष नमाज़ 'तरावीह' होती है। इसमें मुख्य रूप से क़ुरान-ए-शरीफ़ का संपूर्ण पाठ-पठन किया जाता है। अधिकतर लोग इसी महीने में 'ज़कात' देते हैं। वे अपनी संपत्ति, सोना, चाँदी, धन, वार्षिक आय आदि पर ढाई प्रतिशत धन निकालकर गरीबों या ज़रूरतमंदों में बाँटते हैं। इस तरह किया जाने वाला दान ही 'ज़कात' कहलाता है। इसके साथ-साथ ईद की नमाज़ से पहले 'फ़ितरा' (दान) भी देना ज़रूरी है। इसलिए भी इसे ईद-उल-फ़ितर कहा जाता है। इस तरह रमज़ान के महीने में चारों ओर परोपकार की भावना छा जाती है। जिससे सबको मानवसेवा के पथ पर बढ़ने की प्रेरणा मिलती है। इसी महीने में 'शब-ए-क़दर' जागने की रात होती है। यह एक महत्वपूर्ण इबादतों की रात है। इसलिए बच्चे-बच्चे भी बड़ों के साथ रात भर जागते हुए इबादतों में लीन होते हैं। रमज़ान की विशेषताओं में 'एतेकाफ़' भी एक है। पूर्णतः मसजिद में रहकर अल्लाह की इबादत में लीन होना 'एतेकाफ़' है। इस महीने में विशेष रूप से दुआएँ माँगी जाती हैं, जिनमें विश्वकल्याण की भावना होती है।

रमज़ान के रोज़े पूरे होते ही अगले दिन ईद-उल-फ़ितर मनाते हैं। यह शव्वाल के महीने का पहला दिन होता है। ईद के दिन सब नये कपड़े पहनते हैं, ईतर लगाते हैं। विशेष रूप से शिरख़ुर्मा (सेवइयाँ) बनाते हैं। ईद की नमाज़ ईदगाह में पढ़ते हैं। नमाज़ में छोटे-बड़े, अमीर-ग़रीब, सब

© NCERT not to be republished

एक साथ मिलकर एक ही पंक्ति में खड़े होते हैं। यह दृश्य देखने लायक़ होता है। इसके बाद एक-दूसरे के गले मिलते हुए ईद मुबारक कहते हैं। इस खुशी में विविध धर्मों के लोग भी भाग लेते हैं और ईद की शुभकामनाएँ देते हैं। इस तरह धार्मिक सद्भावना से वहाँ के वातावरण की शोभा और भी बढ़ जाती है।

रमज़ान धार्मिक पर्व होते हुए भी सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यह शांति, अहिंसा, त्याग, परोपकार, न्याय, धर्म आदि गुणों का विकास करता है। हमें मानवता के पथ पर बढ़ने की प्रेरणा देता है। उपवासों का यह पावन पर्व हमें सद्भावना के सूत्र में बांधकर मानव कल्याण का संदेश देता है।

© SCERT not to be republished

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर सोचकर लिखिए।

1. सद्भावना के विकास में त्यौहारों का क्या महत्व है?
2. त्यौहार मनाने में बच्चों की खुशियाँ कैसी होती हैं?
3. 'मानव सेवा ही माधव सेवा है।' इस पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

(आ) पाठ पढ़िए। अभ्यास-कार्य कीजिए।

♦ **पाठ के आधार पर वाक्यों को सही क्रम दीजिए।**

1. सभी धर्मों के लोग विविध प्रकार के उत्सव व त्यौहार मनाते हैं। ( )
2. यहाँ अनेक धर्मों व जातियों के लोग रहते हैं। ( )
3. ये त्यौहार समाज में खुशी और सजगता लाते हैं। ( )
4. भारत प्राचीन और विशाल देश है। (1)

♦ **इन वाक्यों के भाव स्पष्ट कीजिए।**

1. नागरिकता और सामाजिकता की भावनाएँ बढ़ती हैं।
2. उपवासों का यह पावन पर्व हमें मानव कल्याण का संदेश देता है।

♦ **नीचे दी गयी पंक्तियाँ पढ़िए। प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

सूरज चाँद सितारों वाली
हमदर्दी की प्यारी-प्यारी, ईद मुबारक।
हमको, तुमको, सबको अपनी,
मीठी-मीठी ईद मुबारक।।

प्रश्न 1. सूरज चाँद सितारों वाली क्या है?

2. ईद कैसी होती है?

3. किस-किस को ''ईद मुबारक'' की शुभकामनाएँ दी गयी हैं?

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. सहरी क्या है?
2. रोज़े के बारे में लिखिए।
3. त्यौहारों के विषय में भारत की क्या विशेषता है?

(आ) ईद की शुभकामनाएँ देते हुए तीन संक्षिप्त संदेश (एस.एम.एस) लिखिए।

(इ) उपवासों से किन गुणों का विकास होता है?

(ई) निम्नलिखित इस्लामी महीनों के नाम समझिए।

1. मोहर्रम	2. सफ़र	3. रबि-उल-अव्वल
4. रबि-उस-सानि	5. जमादि-उल-अव्वल	6. जमादि-उस-सानि
7. रज्जब	8. शाबान	9. रमज़ान
10. शव्वाल	11. ज़िलखदा	12. ज़िलहज्ज

© SCERT not to be republished

भाषा की बात

(अ) वाक्य पढ़िए। भेद समझिए।

1. रोज़े रखते हैं। - रोज़े रखे जाते हैं।
2. बच्चे खुशी मनाते हैं। - बच्चों के द्वारा खुशी मनायी जाती है।
3. ईद का चाँद देखते हैं। - ईद का चाँद देखा जाता है।
4. इसे सहरी कहते हैं। - इसे सहरी कहा जाता है।
5. लड़के ने रोटी खायी। - लड़के से रोटी खायी गयी।
6. लड़का रोटी खाता है। - लड़के से रोटी खायी जाती है।
7. लड़का दौड़ नहीं सकता। - लड़के से दौड़ा नहीं जाता।

ऊपर दिये गये वाक्यों में कुछ क्रियाएँ कर्ता के अनुसार हैं। और कुछ कर्म के अनुसार हैं। इन्हीं में कुछ क्रियाएँ क्रिया के अनुसार हैं। इस तरह वाक्य के रूप को वाच्य कहते हैं।

वाच्य के प्रकार -

कर्त्तृवाच्य	कर्मवाच्य	भाववाच्य
कर्ता के अनुसार क्रिया हो और वाक्य में कर्ता प्रधान हो। जैसे- **लड़का रोटी खाता है।**	कर्म के अनुसार क्रिया हो और वाक्य में कर्म प्रधान हो। जैसे- **लड़के से रोटी खायी जाती है।**	क्रिया के भाव के अनुसार क्रिया हो और वाक्य में क्रिया का भाव प्रधान हो। जैसे- **लड़के से दौड़ा नहीं जाता।**

परियोजना कार्य

1. **किसी एक व्यंजन बनाने की विधि पता कीजिए और लिखिए।**
   (अ) उगादि पच्चड़ी (आ) शीरखुर्मा (इ) क्रिसमस केक

मनुष्य उत्सवप्रिय होता है। - महाकवि कालिदास

© SCERT not to be republished

उपवाचक

बुद्धिमान बालक

मगध की राजधानी पाटलीपुत्र में राज-दरबार का मुख्य कक्ष। सम्राट महापद्मानंद एक सुसज्जित सिंहासन पर बैठे हैं। सभी अधिकारी तथा दरबारी अपने-अपने स्थानों पर विराजमान हैं। दरबार दर्शकों से भरा हुआ है। एक ओर लोहे का बड़ा-सा पिंजरा रखा है, पिंजरे में एक सिंह है, जिसके दरवाज़े पर ताला लगा है।

सम्राट : महामंत्री!

महामंत्री : आज्ञा महाराज।

सम्राट : क्या सारी व्यवस्था पूरी हो चुकी है?

महामंत्री : जी महाराज! यदि आज्ञा हो तो घोषणा करवा दी जाय।

सम्राट : आज्ञा है।

महामंत्री : प्रतिहारी!

प्रतिहारी : (अभिवादन करता है) आज्ञा मंत्रिवर।

महामंत्री : मगध नरेश की घोषणा दरबार में पढ़ी जाए।

प्रतिहारी : जो आज्ञा महाराज। (ऊँचे स्वर में पढ़ना आरंभ करता है।)

'' सभी सभासदो एवं नागरिको! चक्रवर्ती सम्राट महा पद्मानंद की ओर से यह घोषणा की जाती है कि जो व्यक्ति बिना ताला तोड़े, बिना पिंजरा खोले सामने रखे पिंजरे में से सिंह को ग़ायब कर देगा, उसे मुँह माँगा इनाम दिया जायेगा। उसका सम्मान भी किया जायेगा। जो भी व्यक्ति अपना भाग्य आज़माना चाहे वह आगे आ सकता है।''

(सभा-कक्ष में सन्नाटा छा जाता है।)

एक सभासद : महाराज के पराक्रम की जय हो। क्या यह संभव हो सकता है कि बिना पिंजरा खोले सिंह को ग़ायब कर दिया जाए।

महामंत्री : महाराज का आदेश समस्या सुलझाने के लिए है, तर्क करने के लिए नहीं, यह बुद्धि की परीक्षा है। बुद्धिमान और कुशल व्यक्ति ही ऐसा कर सकेगा, यही हमारा विश्वास है।

दूसरा सभासद : मान्यवर, इस असंभव कार्य को तो परमेश्वर ही संभव कर सकता है। हमें तो लगता है कि यह कार्य ईश्वर के अलावा किसी अन्य के बस की बात नहीं।

महामंत्री : ईश्वर की दी हुई प्रतिभा सभी में निवास करती है। हो सकता है कि कोई प्रतिभावान व्यक्ति इस असंभव कार्य को संभव बना दें।

© NCERT not to be republished

जन-समुदाय : यदि सिंह बाहर आ गया तो निश्चय ही हम सब को खा जायेगा। आप इसे बाहर न आने दें। बुद्धि-परीक्षा किसी और तरह से भी हो सकती है। यही हमारी प्रार्थना है।

सम्राट : यह समस्या मगध राज्य के बुद्धिमानों को पड़ोसी राज्य की ओर से दी गई एक चुनौती है। घबराने की कोई बात नहीं। सभी की सुरक्षा के प्रबंध कर दिए गए हैं। आप शांति से समस्या का समाधान ढूँढ़ें।

(कुछ समय तक सभा कक्ष में सन्नाटा छा जाता है।)

सम्राट : तो क्या मैं यह समझ लूँ कि मगध में प्रतिभा की कमी है? बुद्धिमत्ता का अभाव है?

बालक : महाराज की जय। मैं यह कार्य कर सकता हूँ। महाराज मुझे सिंह को ग़ायब करने की अनुमति दीजिए।

(सभी विस्मय से बालक की ओर देखते हैं।)

महामंत्री : निडर बालक! तुम्हारा नाम क्या है?

बालक : मुझे चन्द्र कहते हैं, श्रीमान।

महामंत्री : चन्द्र! यह बच्चों का खेल नहीं है। तुम जाओ और बच्चों के खेल खेलो। उछलो, कूदो और दौड़ो। यह कोई साधारण खेल नहीं, बुद्धि का खेल है।

© SCERT not to be republished

बालक : महामंत्री! क्या इस प्रतियोगिता में आपने कोई आयु सीमा भी रखी है?

महामंत्री : (हँसकर) वत्स, सुई तलवार का कार्य नहीं कर सकती।

बालक : महोदय, तो तलवार भी सुई का स्थान नहीं ले सकती।

सम्राट : यह बालक कौन है? जो इतना बढ़-चढ़कर बातें कर रहा है!

महामंत्री : महाराज यह एक हठी बालक है।

सम्राट : बालक हठ मत करो। नहीं तो तुम्हें सिंह के पिंजरे में बंद कर दिया जायेगा। (बालक की माँ अपने पुत्र को एक ओर खींचने का प्रयास करती है परन्तु बालक अपना हाथ छुड़ाकर पिंजरे की ओर बढ़ता है।)

बालक : महाराज, यदि मैं समस्या का समाधान न ढूँढ़ सका तो आप जो चाहे दंड दें। मुझे पिंजरे के पास जाने की अनुमति दीजिए।

सम्राट : खुशी से जा सकते हो। (बालक पिंजरे के पास जाकर सिंह को ध्यान से देखता है और अपनी बुद्धि लड़ाता है। सिंह का रहस्य वह जान लेता है। दरबार में सब चकित हो कर देख रहे थे। सब में कुतूहलता थी कि आगे क्या होने वाला है।)

बालक : महाराज, मैं सिंह को बाहर निकाल दूँगा। आप कृपया पिंजरे के चारों ओर आग जलाने का प्रबन्ध करवा दें और मुझे कुछ समय तक अपना कार्य करने दें। (सम्राट के आदेशानुसार पिंजरे के चारों ओर आग लगा दी जाती है। पिंजरा आग की लपटों में घिर जाता है। देखते ही देखते शेर ग़ायब हो जाता है। आग की लपटें धीरे-धीरे शांत हो जाती हैं। सभी लोग अपने-अपने स्थान से यह विस्मयकारी दृश्य देख कर दंग रह जाते हैं। पिंजरा खाली हो जाता है।)

बालक : देख लीजिए महाराज, सिंह पिंजरे से अदृश्य हो चुका है और पिंजरे का ताला जैसे का वैसा ही है।

सम्राट : वाह! बहुत ख़ूब। चन्द्र तुमने तो कमाल कर दिया। तुमने अपनी बुद्धि से सिंह के निर्माण की पहचान कर उसे आग की गर्मी से पिघला दिया।

प्रश्न

1. सिंह किससे बना हुआ था?
2. बालक चन्द्र ने सिंह को कैसे ग़ायब किया?
3. इस कहानी से क्या शिक्षा मिलती है?

© NCERT not to be republished